समाज सुधारक -संत कबीर

- प्रा. साहेबराव गायकवाड
हिंदी विभाग

संत कवि कबीर का जीवन वृत्त प्राय: अंधकार में है। उसके जन्म, मृत्यु, वंश आदि के संबंध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नही है। जनश्रुतियों के अनुसार कबीर का जन्म वि. संवत १४५५ काशी में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। विधवा ब्राह्मणी लोक लाज से भयभीत होकर इन्हे काशी के लहरतारा तालाब के निकट छोड गई थी। वहाँ निमा और नीरू नामक जुलाह दम्पति ने उन्हे अपने घर लाकर पुत्रवत लालन-पालन किया। कबीर की पत्नी का नाम लोई अथवा धनिया तथा पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। इस प्रकार कबीर का जन्म काशी में तथा मृत्यु वि. सं. १५७५ मगहर में हुई।

कबीर ने किसी पाठशाला में शिक्षा ग्रहण नही की। सत्संग तथा आत्मचिन्तन के माध्यम से इन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया वह अनुपमेय है। उन्होने सम्पूर्ण उत्तर भारत की घूमघूमकर पैदल यात्रा की।

भारतवर्ष के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक इतिहास से पंद्रहवी शताब्दी का विशेष महत्त्व है। देश में मुसलमानों का राज्य स्थापित हो जानेपर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव गर्व और उत्साह के लिए स्थान न रह गया। दुसरी ओर हिन्दू राजाओं के पास न तो बल था और न साहस। धार्मिक और राजनैतिक शोषण से जन सामान्य पीडित था। ऐसे समय कबीर का आविर्भाव हुआ। कबीर ने तत्कालीन परिस्थितीयों को देखा जिसमें उन्हे धार्मिक आडम्बरों का बोलबाला, राजकीय अधिकारीयों का आचरण भ्रष्ट व्यवहार, बालविवाह, बहूविवाह आदि सामाजिक कुरीतियाँ दिखाई दी।

अत: कबीर ने धर्म और दर्शन को समाज की उपयोगिता की कसौटी पर देखने का प्रयत्न किया। कबीर का मत है कि बाह्य अवडम्बर कर्म कांडोपर आधारित आचार पद्धतीयों से धर्म बोझिल हो जाता है। उन्होंने किसी धर्म विशेष का पक्ष न लेते हुए हिन्दू, एवं मुस्लिम दोनों को बाह्याडंबरो के लिए फटकारा-

''न जाने तेरा साहिब कैसा है ?

मसिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या

साहिब तेरा बहिरा हैं।

पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है

अन्दर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है॥''

मानव - मानव में भेद उत्पन्न करनेवाले बाह्य अवडम्बर, रूढीयों, परम्पराओं और अन्धविश्वासो के प्रति जैसा क्रांतिकारी रूप कबीर ने अपनाया वैसा कोई संत कवि नही अपना सका। कबीर की मान्यता है कि जब मानव मात्र की उत्पत्ति एक ही ज्योति से हुई है - एक ही ईश्वर सबमे व्याप्त है। प्रकृति ने भी सबको जीवन के एक से उपकरण दिये है, तब भेद-भाव उत्पन्न करना, मनुष्य - मनुष्य के बीच घृणा का व्यापार चलाना है।

''एक जोति लै सब रूपजा कौन ब्राह्मण लीन सूदा।''

कबीर की मान्यता है कि केवल माला एवं तिलक धारण करके ईश्वर की प्राप्ति नही होती। माला तिलका पहरि मनमाना, लोगनि खिलौना जाना। ये तो बाह्य अडम्बर है सही माला तो अन्त:करण की शुद्धता है। यदि भक्त के हृदय में शुद्धता नही, उसका आचरण शुद्ध नही तो तिलक लगाना, सिर मुंडना, तीर्थ यात्रा करना, गेरूआ वस्त्र धारण करना आदि पेट भरने के लिए किये गए नाटक है। मूर्तिपूजा में भी यदि श्रद्धा - भाव नही है तो वह बाह्य आडम्बर मात्र ही है उन्होंने समाज को व्यवहारिक सीख देते हुए कहा।'

''पत्थर पूजे हरि मिले तो मै पूजूँ पहाड।

ताते या चाकी भली पिसै और खाय संसार।''

कबीर कोरे शास्त्र ज्ञान को सर्वोपरि मानने के पक्ष में नही है। समाज में पारस्पारिक प्रेम होना आवश्यक है।'

''पोथी पढि पढि जण मुआ, पंडित भयान कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय।''

समाज में आज भी अनाचार, अत्याचार, विषमता, शोषण, स्वार्थ इत्यादि विघातक तत्त्व व्याप्त हो रहे है। इसका कारण मनुष्य की भौतिकवादी प्रवृत्ति है। वह ऐश्वर्य, विलास को ही जीवन का श्रेय और प्रेम मान रहा है। मनुष्य अनीति के मार्ग से धन एकत्र करता रहता है, उस समय वह यह नही सोचता है कि यह धन हमारे साथ नही जानेवाला।

कबीर जाति-पाँति के कारण उत्पन्न विषमता से दु:खी होते है और समाज को यही समझाते है।

''जाति-पाँति पूछे कोई। हरि को भजि से हरि का होई।''

कबीर के जीवन का लक्ष्य मानव मात्र में समता और एकता स्थापना ही था। वस्तुत: कबीर तो मानव प्रेमी और मानवतावादी महापुरुष थे। भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के वे प्रथम संत कवि कहे जा सकते है। धर्म के सच्चे रहस्य को भूलकर कृत्रिम विभेदों द्वारा उत्तेजित होकर दोनों जातियाँ हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के नामपर अधर्म कर रही थी। ऐसी स्थिति में सच्चे मार्ग के प्रदर्शन का श्रेय कबीर को है। वे एक सच्चे समाज सुधारक है। जिन्होंने अपने युग में व्याप्त धार्मिक पाखण्ड एवं कुरीतियों को दूर करने तथा पारस्पारिक विरोध को हटाने का प्रयास किया है।

इस प्रकार कबीर ने अपनी कठोर वाणी द्वारा जातियवाद, धर्माध विश्वास, रुढीयों और परंपरा को छिन्न-भिन्न कर दिया। उन्होंने अपने समाज के पथ-प्रदर्शन कार्य किया। उनके उपदेश धार्मिक सुधार तकही सिमित नही है, बल्कि भारतीय नवयुग के समाज सुधारको में भी कबीर का स्थान सर्व प्रथम है।

■ ■ ■

अखबार

आज का हर अखबार
बासी लगता है !
शैक्षणिक, राजनीतिक, भ्रष्टाचार,
सामाजिक, धार्मिक, अत्याचार,
आतंकवादी, आतंकवादी, बलात्कार,
दुर्घटनाएँ, साम्प्रदायिक दंगे
आगजनी, कर्फ्यू खून की होली
दहेज पीडित, अबला नारी
पदलिप्सा, अमानूषता, धोखाधडी
नेताओ का दल-बदल
मंत्रियो के विदेश दौरे
विदेशियो के भारत दौरे
कागजो पर रेंगती, बडी बडी योजनाएँ
संसद में सांसदो का असंसदीय शोर
इसके सिवा क्या ताजा है ?
आज का हर अखबार बासी लगता है।

- डॉ. शेख ए. एम्.

इक्किसवी शताब्दी का मानव

इक्किसवी शताब्दी का मानव
बैठा है विनाश के कगार पर
बैठा है बारुद के ढेर पर
किंतु
शांति से सोया है उस सेज पर
जैसे भीष्म सोये थे बाप - शैय्या पर
भीष्म चिंतीत थे युद्ध के विनाश से
किंतु
इसे अहं ने घेरा है
इसे है गर्व अपनी बुद्धी और शक्ति का
भूल बैठा यह 'प्रेम, अहिंसा सदाचार
बन बैठा स्वार्थी कठोर निर्णय
इक्किसवी शताब्दी के इस वैज्ञानिक युग में, मनुष्य बन बैठा 'एक यंत्र'!

-डॉ. शेख ए . एम्.

संदेशवहन में हिंदी का प्रयोग

- कु. सुजाता भरत शिंदे
प्रथम वर्ष कला

इक्कीसवी सदी में दुनिया भर में हिंदी का संदेशवहन के माध्यम से प्रसार किया जा सकता है। संदेशवहन में ही मानव जाति का मूल तत्त्व है। इस माध्यमद्वारा हम अपनी भाव तथा विचार दूसरों के सामने व्यक्त कर सकते है। आदीमानव विशिष्ट ध्वनियो, संकेतो और गतिविधीयोंद्वारा संदेश वहन करता था। फिर संदेशवहन में क्रांती होकर इसमें विविध भाषाएँ और साधनों का उपयोग किया जाने लगा। टेलिव्हिजन, रेडिओ, वृत्तपत्रो' और संगणकद्वारा संदेशवहन होने लगा। इन्ही साधनों द्वारा हम हिंदी को जीवित रख सकते है। संपुर्ण हिंदुस्तान में टेलिव्हिजन और रेडिओ पर आधारित कार्यक्रम हिंदी में ही प्रस्तुत करने चाहिए। हिंदी वृत्तपत्र सभी लोगों द्वारा पढे जाने चाहिए।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। उसमें बडी मिठास है। उसी हिसाब से हिंदी को उतना सम्मान मिलना चाहिए। पुरे देश मे हिंदी का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार नयी नयी योजनाएँ बना रही है। टेलीव्हीजन पर विविध विज्ञापन दिए जाते हैं। जैसे - हिंदी पढिए, लिखिए, बोलिए और समझिए' साल में एक दिन ही हिंदी दिवस मनाया जाता है। लेकिन इतना काही नहीं है। शासकीय कामों में हिंदी को अनिवार्य करना चाहिए। अगन अलग-अलग तरह के मनोरंजन हिंदी में किए जाने लगे तो लोग उनमें ज्यादा रूची दिखाएँगे। जैसे की भारत में लोगों का फिल्मो और क्रिकेट की तरफ ज्यादा लगाव है। हिंदी फिल्मे भलेही ना चले पर उनका नाम जरुर होता है। ग्रामीण स्कूलों में हप्ते के चार दिन हिंदी का प्रयोग अनिवार्य करना चाहिये।

हम दुसरे देश के नेताओं को देखते है। कई बार अंग्रेजी का ज्ञान होते हुए भी जब वे दुसरे राष्ट्रों में जाते हैं तब केवल अपनी राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग करते है। लेकिन हम और हमारा नेता ? अरे ! हम तो कुछ दिन या कुछ महिनों के लिए भी अपने देश से बाहर जाते हैं तो केवल अंग्रेजी में बाते करने लगते हैं। क्योंकि हमारी अपनी भाषा बोलने की आदत जो हमसे छूट चुकी होती है। और इसी तरह अगर चलता रहा तो हिंदी भाषा को मृत भाषा होने में ज्यादा समय नही लगेगा। मगर गर्व की बात यह है कि, हमारे प्रधानमंत्री अटलजी जो खुद एक कवी है, उन्होंने राष्ट्रसंघ को संबोधित करते समय हिंदी का प्रयोगही उचित समझा। भारत के प्रथम अवकाश यात्री राकेश शर्मा ने जब अवकाश में से इंदिराजी के साथ हिंदी में बात की तो हिंदी सारे अवकाश में गुँज उठी। इससे पता चलता है की, हिंदी है भारत माँ की बिंदी इस वाक्य में कितनी सार्थकता है।

इसलिए कहती हूँ,

''भाषा हिंदी है हमारी, हिंदी है हम
वतन हिंदुस्तान हमारा,
सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ताँ हमारा।''

■ ■ ■

बदला

वाघ आर. आर.
तृतीय वर्ष कला

दिनेश नागपूर के नजदिक रूपानगर नामक गाँव में शिव मंदिर में रहमा था। उसके पास पहनने के लिए कपडो के सिवा कुछ नही था। वह गाँव में भिक माँगकर अपना पेट भरता था। वह अब दस साल का हो गया था। छ: महिने पहले वह वाशी से यहाँ आया था। वह बिलकुल लावारीस था। उसकी तिसरी कक्षातक पढाई भी हो चुकी थी। उसका जन्म कहाँ हुआ ये तो उसको पता ही नही था। वह अनाथालय में पल रहा था। जब वह चार साल का हुआ तो उसको एक दाम्पत्य किशन और सिमा ने पुत्र के रूप में स्विकार किया।

किशन और सीमा वाशी में पाच साल से रहते थे। उसको कोई संतान नही थी। उसका नजदिक का कोई रिश्तेदार ही नही था। इसलिए वृद्धावस्था में कोई अधार हो इसलिए दिनेश को उसने गोद लिया। किशन वहाँ ही एक फॅक्टरी में काम करता था, उसको अच्छी तनखा मिलती थी उसका दोन कमरों का मकान था वह बाद में दिनेश के नाम करवाना चाहते थे। वे हर इतवार को घुमने जाते थे, उसके पास कार थी, दिनेश भी बहुत खुश था वह नौ वह नौ साल का था। एक दिन घुमकर आते समय उसके पिताजी कार चला रहे थे। उसकी माँ आगे बैठी थी, दिनेश पिछे की सिट पर बैठा था। आगे से एक मोडपर एक ट्रक आया और कार पर टकरा गया। किसी को भी कुछ नही पता चला इसमें दिनेश के माँ-बाप गुजर गये।

उनके मरने के बाद किशन और सीमा के एक दूर के रिश्तेदार ने उसकी संपत्ती पर कब्जा कर लिया दिनेश के हाथ कुछ नही आ सका वह कर भी क्या सकता था, वह उसका सगा बेटा था ही नही। वह बिलकुल लावारिस बन गया। उसकी खाने और सोने की समस्या पैदा हो गयी। उसके बालमन मे उस रिश्तेदार प्रति घृणा पैदा हो गयी। क्योंकि उसने दिनेश के संपत्ती पर कब्जा किया था। उसने उस रिश्तेदार को खत्म करने का निर्णय लिया, लेकीन उसके पास ताकद नही थी। वह बच्चा था वह एक दिन तरकारी की एक ट्रक में बैठकर नागपूर आया और नागपूर से रूपानगर गाँव में।

वह पहले तीन साल शिव के मंदिर में रहता था और माँगकर खाता था। गाँव के लोग अच्छे होने के नाते उसका पेट भरता था। जब वह रात के समय खाना खाने पर वहाँ के कागज के टुकडे जमा करके शिव के मंदिर में जो बस्ती मे दिया जलता था उसी के प्रकाश में पढता था। वहाँ से एक रास्ता नागपूर जाता था। बहुत सारे लोग यहाँ शिवजी का दर्शन लेने आते थे। तीन साल के बाद यह किसी किसान के यहाँ रहने लगा उसे तनखा बहुत कम मिलती और काम बहुत जादा ही था।

उसने काम करके पचास रूपये जमा किये थे। एक दिन उसने गाँव की दुकान में समाचार पत्र में एक विज्ञापन देखा वह उसी मुंबई उपनगर वाशी का था। जहाँ वह बचपन में पढता था वहाँ एक फॅक्टरी के लिए लडकों की जरूरत थी। वह अब पंद्रह साल का हो गया था। उसने वहाँ जाना तय किया, वह वाशी पहुँच गया उस जगह को वह जानता था। फॅक्टरी के मॅनेजर से मिलकर नौकरी मिला ली। उसने पाँच साल के बाद मॅनेजर की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी इसका फायदा दिनेश को हो गया। वह मॅनेजर बन गया क्योंकि वह पाँच साल से इमानदारी से काम करता था। उसका मालिक भी अच्छा था उसको तनखा भी अच्छी मिलती थी। वह अब

बाईस साल का होने पर उसने शादी के लिए लडकियाँ देखना शुरू किया। जहाँ किशन और सीमा के साथ बचपन में दिनेश रहता था वहाँ लडकी देखने गया। वह लडकी उस रिश्तेदार की थी जो दिनेश की संपत्ती लुट चुका था। दिनेश भी मॅनेजर होने के नाते उसने दिनेश को लडकी देना पसंद किया। लेकीन दिनेश को वह पहचान नही सके। दिनेश ने उसे पहचान लिया था। पर उसे बताया नही।

दिनेश की शादी धुमधाम से हुई। दिनेश और उसकी पत्नी टिना कीराये पर रहते थे। दिनेश के मन में विचार आया की अपना घर होने पर भी उसे किराये पर रहना पडता है। उसने टिना के माँ बाप को खत्म करना पहले ही बचपन में तय किया था। अब वह मौका आया था। उसने टिना को घर पे रखकर उसके माँ - बाप दोनो को बुलाकर किसी देवी का दर्शन लेने जायेंगे ऐसा कहा। परंतु टिना को घर पर ही रखा दिनेश आगे था और पिछे टिना के माँ - बाप बैठे थे। मालशेज घाट में कार आ गयी। एक मोडपर दिनेश ने ब्रेक को बडा ठंडा लगाया और निचे उतरा।

उसने टिना के माँ बाप को उतरने के लिये मना किया। कार कुछ खराब होने का बहाना किया। उसने दूर से डंडे को धक्का मारा तो कार पहाडी के नीचे घाट में गिर गयी। दोनो ही मर गये। वह सुरक्षित था दिनेश तो अब निश्चिंत हो गया वह हॉटेल में ही रहा उसने टिना को बताया कि मै मित्रों के साथ घुमने कया हुँ और तुम्हारे माँ-बाप दोनो ही दर्शन लेने गये है। दुसरे दिन कार की ब्रेक फेल होने पर एक कार घाट में गिर गयी ऐसे अखबार में आया। दिनेश और टिना घर पर ही थे। समाचार पत्र में अपने माँ-बाप के मरने की खबर देखकर टिना रोने लगी। उसे अब कोई नही था। लेकिन उसे दिनेश पर शक होने लगा क्योंकि वह उसके साथ गया था। लेकिन दिनेश सुबह तो घर आया था। तब उसने कहाँ मै उसके माँ-बाप के साथ नही गया था।

टिना को दिनेश पर पुरा शक था। पर वह पुलिस को बताकर अपने सुहाग को खतरे में नही डालना चाहती थी। दिनेश और टिना बाद में अपने घर पर रहने के लिए आयें जहाँ दिनेश बचपन में रहता था। उसका खुद का घर था, उसका अपना घर था !

■ ■ ■

सुभाषित सरिता

सत्य

नास्ति सत्यसमो धर्मः न सत्याद् विद्यते परम्।
न हि तीव्रतरं किंचिद् अनृताद् इह विद्यते॥

(महाभा. आदि. अ. ७४)

सत्याचरण न करता, शकुंतलेचा स्वीकार न करणाऱ्या दुष्यंताला ती म्हणते - ''सत्यासारखा धर्म नाही, सत्यापेक्षा अधिक श्रेष्ठ असे काही नाही, आणि असत्यापेक्षा अधिक तीक्ष्ण (भयंकर) असे या जगात काही नाही.''

न नर्मयुक्तं वचनं हिनस्ति, न स्त्रीषु राजन् न विवाहकाले।
प्राणात्यये, सर्वधनापहारे, पञ्च अनृतानि आहुः अपातकानि॥

(महाभा. आदि. अ. ८२ व मनुस्मृति)

शकुंतलेला दिलेले वचन मोडणारा व तिचा स्वीकार न करणारा दुष्यंत म्हणतो, ''विनोदयुक्त बोलणे, स्त्रियांविषयी बोलणे, विवाहप्रसंगी, प्राणनाश होत असता किंवा सर्व धन हिरावून घेतले जात असता, अशा पाच प्रसंगांची असत्य भाषणे ही पातके होत नाहीत.''

महाभारतात कृष्ण व भीष्म यांचे तोंडीही हा श्लोक आलेला असून मनुस्मृतीतही तो आढळतो. धर्मशास्त्राने सारासार विचार करूनच सत्यास हे पाच अपवाद सांगितले आहेत.